3 अगस्त 2013 **ओ•आर•सी (दिल्ली)**

3 अगस्त 2013 शनिवार नुमःशाम को हम सभी की मीठी परम आदरणीया दादी जानकी जी एवं दादी गुल्ज़ार जी का ओ•आर•सी दिल्ली में शुभ आगमन हुआ। अपनी प्रिय दादियों के शुभ आगमन की खुशी में ओ•आर•सी को बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाया गया जिसमें जगह–जगह मीठी दादियों के स्वागत में खूबसूरत पंक्तियों के स्लोगन के बोर्ड, झण्ड़े, एवं बिजली की जगमगाहट की गई हैं। दादियों के पहुॅचने पर सुन्दर नृत्य एवं संगीत के माध्यम से ओ•आर•सी के कुछ भाई मीठी दादियों को ओ•आर•सी के मुख्य द्वार से परिवार भवन तक लेकर आए। जहॉ पर ओ•आर•सी निवासी एवं अन्य स्थानों से पहुॅचे सभी ब्राह्माण भाई–बहनों ने मीठी दादियों का बड़े ही हर्षेल्लास के साथ सुन्दर फूलों के गुलदस्तों से स्वागत किया।

तत्पश्चात– रात्रि 9 बजे मीठी दादियॉ ओ•आर•सी के ट्रेनिंग सेन्टर के क्लास रूम में आए। जहॉ पर दादियॉ ओ•आर•सी निवासी सभी भाई–बहनों से मिले जिसमें ओ•आर•सी से संबंधित सेवाकेन्द्रो की टीचर्स बहने एवं दिल्ली की कुछ वरिष्ठ बहनें भी सम्मिलित थी। रात्रि क्लास में पुनः मीठी दादियों का गीत नृत्य एवं फूलों के गुलदस्तों से स्वागत किया गया।

<u>उपस्थित भाई–बहनों के साथ दादी जानकी जी की रूह रिहान–</u>

आज मेरी खुशी का पारावार नहीं दिल करता है नाचूॅ, हमारी गुल्ज़ार दादी बहुत होशियार है जो हमें अपने स्नेह की डोरी में बॉधकर यहॉ ले आई। (दादी जानकी जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था) हमें याद आता है शुरू में हमने दिल्ली में कमला नगर व अन्य छोटे स्थानों पर रहकर सेवाएं शुरू की। जब आबू में डायमण्ड हॉल बना तो हमने कहा कि बाबा दिल्ली में भी बड़ा स्थान होवे, तो देखो बाबा ने कितना बड़ा स्थान (ओ•आर•सी) बना दिया। हम तीन बारी ओम् शान्ति करती हैं जो कभी नहीं भूलना। मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूॅ, शान्तिधाम की रहने वाली हूॅ और शान्ति के सागर की सन्तान हूॅ। रोज़ अपने दिल दर्पण को देखना और उसे योग से साफ करना क्योंकि बाबा देखेगा। जो बाबा से वायदा करते हो उसे निंभाना है। मुझे तो बाबा के प्यार ने पिंघला दिया हैं।

दादी गुल्ज़ार जी– सभी के दिल में कौन है– मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा। दिल से निकल तो नहीं जाता? कभी अपने को अकेला नहीं समझो, बाबा साथ है बाबा को मेरी दिल प्यारी है कहॉ जाएगा नहीं। आपके दिल में बैठ गया ना– निकल ही नही सकता। क्योंकि मेरे बिना उसे कौन प्यारा है। सदा अपने को बाबा के साथ कम्बाइन्ड़ समझो। हम कभी अकेले नहीं होते–बाबा दिल में है। देखना माया चतुर है, तो हम उससे भी चतुर हैं। क्योंकि हम उसकी चतुराई जान गए। तो आप सभी खुश रहने वाले खुशनसीब हो। खुशहाल शब्द सदा याद रखो। कुछ भी हो जाए लेकिन खुशी न जाए। बाबा मदद कर देंगा।

तत्पश्चात– ओ•आर•सी से संबंधित सेवाकेन्द्र पर रहने वाली टीचर बहन का मीठी दादियों के सानिध्य में समर्पण समारोह मनाया गया। रूहानी बहन अपने लौकिक जीवन में एक स्कूल टीचर थी जो कई बार ओ आर सी में नवोदया स्कूल से टीचर्स की ट्रेनिंग में आयी थी, इस दौरान इन्होंने योग में शान्ति की गहन अनुभूति की थी, इस दिव्य अलौकिक अनुभव को अपने दिल में समाते हुवे बहन ने तीन वर्ष बाद ओ आर सी से संबंधित सेवाकेन्द्र पर कोर्स किया और कुछ ही समय पश्चात सेवाकेन्द्र पर रहकर अपनी सेवाएं देना शुरू कर दिया। आज अपनी प्रिय दादियों की उपस्थिति में बहन का समर्पण समारोह बड़े ही उमंग उत्साह के साथ मनाया गया। प्रिय दादी जानकी जी ने अपने गले से फूलों की माला उतार कर रूहानी बहन को बड़े ही प्यार से पहनायी और बहन को गले से लगाया। मीठी दृष्टि और वरदान देते हुए दादी जी ने कहा कि– बाबा से जो वायदा किया है उसे सदा ही प्रैक्टिकल में निंभाना, दादी जी ने अपने हाथों से बहन को टोली खिलायी और बहुत प्यार किया। दादी गुल्ज़ार जी ने भी अपनी चुनरी उतार कर बहन को पहनायी, अपने हाथों से टोली खिलायी और वरदान भरी दृष्टि दी। इस सुन्दर समारोह में बहन के साथ–साथ मीठी दादियों का भी अलौकिक श्रंगार किया गया। बहन के परिवार जनों ने भी मीठी दादियों का स्वागत और सम्मान किया। दादियॉ भी बड़े प्यार से बहन के परिवार वालों से मिली और बहन को ईश्वरीय सेवा अर्थ समर्पित करने के लिए उन्हें मुबारक भी दी। समर्पित होने वाली रूहानी बहन को ईश्वरीय ज्ञान में पॉच वर्ष हुए हैं। जिन्होंने आज अपने जीवन को पूरी तरह से ईश्वरीय सेवा में समर्पित कर दिया।

ओम शान्ति।